॥ श्रीः ॥

अष्टजाम ।

अर्थात्

ंनपुरीनिवासी प्रसिद्ध श्रीदेवकविजी ने श्री
राधामाधव के आठो पहर के बिहार
का अपूर्व वर्णन किया है।

ूप ग्रंथ को बड़े परिश्रम से खोजकर भा-
रतजीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण
बर्म्मा ने निज यंत्रालय मे
छापकर प्रकाश किया।

काशी।

भारतजीवन प्रेस बनारस।

सन् १८९२ ई०।

प्रथम बार १०००]

[मूल्य ≶)